अंगूठे चूमने का मसला
हज़रत सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की सुन्नत
हज़रत मौलाना मुहम्मद शफ़ीअ ओकाड़वी (ख़तीबे पाकिस्तान)
www.jannatikaun.com

(सुन्नते सिद्दीकी)

मुरत्तिबा

खतीबे पाकिस्तान हज़रत मौलाना मुहम्मद शफ़ीअ़ साहब ओकाड़वी

# पेशे लफ़्ज़

खुश अक़ीदा मुसलमानों की बड़ी तादाद अपने प्यारे रसूले रहमत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का मुक़द्दस नामे पाक अज़ान में सुनकर अंगूठे या अंगुश्ते शहादत को चूमकर आँखों से लगाती है। मुसलमानों का यह अ़मल बिला शुबहा जाइज़ और बाइसे ख़ैरो-बरकत है जिस पर सहाब-ए-किराम, ताबईने उज़्ज़ाम फ़ुक़हा-ए-किराम और हमारे सल्फ़ सालेहीन का अ़मल रहा है।

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नामे पाक पर अंगूठे चूमना जिस तरह फ़र्ज़ या वाजिब नहीं उसी तरह वह हराम व नाजाइज़ भी नही है इस मुबारक फ़ेअ़ल को नाजाइज़ कहना महज़ जिहालत या फिर ग़लत-फ़हमी है।

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के नामे अक़दस सुनकर अंगुश्ते शहादत आँखों से लगाना, हुज़ूर के नामे अक़दस की ताज़ीम है और सरकार सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ताज़ीमो तौक़ीर की क़ुरआन पाक में जा-बजा ताकीदें आई हैं। हज़रत इब्नुलहाम रहमतुल्लाहु तआ़ला अ़लैह फ़रमाते है "हर वह फ़ेअ़ल जिससे ताज़ीम मक़सूद हो बिलाशुबहा मुस्तहब है।"

पेशे नज़र मक़ाले में बर्रे सग़ीर हिन्द व पाक के मुमताज़ आ़लिमे दीन हज़रत अ़ल्लामा मुहम्मद शफ़ीअ साहिब ओकाड़वी रहमतुल्लाह अ़लैह ने सरकार के नामे पाक पर "अंगूठे चूमने का मसअला" के मौज़ूअ़ पर अहादीसे मुबारिका व अक़वाले फ़ुक़हा की रौशनी में खुल कर ख़ामा फ़रसाई फ़रमाई है।

अल्लाह तआ़ला से दुआ है कि इस किताब के ज़रीए मुसलमानों को ज़्यादा से ज़्यादा फ़ाइदा पहुंचे। (आमीन बजाह सय्यदुल मुर्सलीन सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम)

सय्यद आ़रिफ़ अ़ली रज़वी सदर रज़ा लाईब्रेरी कल्यान

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ ط

हु.जूरे पुरनूर शफ़ीअ़े यौमुन-नुशूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का नामे पाक अज़ान में सुनने के वक़्त अंगूठे या अंगुश्ताने शहादत चूमकर आँखों से लगाना क़तअ़न जाइज़ व मुस्तहब और बहुत ही बाइसे रहमत व बरकत है। इसके जवाज़ पर दलाइले कसीरह मौजूद है और मुमानिअत पर कोई दलील मौजूद नहीं। चन्द दलाइल हदिये नाज़रीन है।[1]

(1) अ़ल्लामा फ़ाज़िल-कामिल शैख़ इस्माईल हक़्क़ी रहमतुल्लाह अ़लैह अपनी शुहरा-ए-आफ़ाक़ तफ़सीर रूहुल बयान में फ़रमाते हैं-

وَفِي قَصَصِ الْأَنْبِيَاءِ وَغَيْرِهَا أَنَّ آدَمَ عَلَيْهِ السَّلَامُ اشْتَاقَ إِلَى لِقَاءِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِيْنَ كَانَ فِي الْجَنَّةِ فَأَوْحَى اللّٰهُ تَعَالَى إِلَيْهِ هُوَ مِنْ صُلْبِكَ وَيَظْهَرُ فِي آخِرِ الزَّمَانِ فَسَأَلَ لِقَاءَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِيْنَ كَانَ فِي الْجَنَّةِ

क़िससुल अम्बिया वग़ैरह कुतुब में है कि जब हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम को जन्नत में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की मुलाक़ात का इश्तियाक़ हुआ तो अल्लाह तआ़ला ने उनके तरफ़ वही भेजी कि वह तुम्हारे सल्ब से आख़िर ज़माने में ज़हूर फ़रमायेंगे तो हज़रत आदम ने आपकी मुलाक़ात का सवाल किया तो अल्लाह तआ़ला ने आदम अलैहिस्सलाम के दायें हाथ के कलमे की उंगुली में नूरे मुहम्मदी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम चमकाया तो उस नूर ने अल्लाह

---

1. मसअल-ए-हाज़ा के मुतअल्लिक़ मुफ़स्सल बहस देखनी हो तो "मुनीरुलऐन फी हुकमे तक़बीलिल अब्हामीन" मुसन्निफ़हे आला हज़रत फ़ाज़िल बरैलवी रहमतुल्लाह अलैह "जाअलहक़्क़ो व ज़हकल-बातिल" मुसन्निफ़ह हज़रत मौलाना मुफ़्ती अहमद यार ख़ां नईमी का मुताला करें।

فَاَوْحَى اللّٰهُ تَعَالٰى اِلَيْهِ فَجَعَلَ اللّٰهُ
اَلنُّوْرَ الْمُحَمَّدِىَّ فِىْ اِصْبَعِهِ
الْمُسَبِّحَةِ مِنْ يَدِهِ الْيُمْنٰى فَسَبَّحَ ذَا
لِكَ النُّوْرُ فَلِذَالِكَ سُمِّيَتْ تِلْكَ
الْاِصْبَعُ مُسَبِّحَةً كَمَافِى الرَّوْضِ
الْفَائِقِ اَوْاَظْهَرَاللّٰهُ تَعَالٰى جَمَالَ
حَبِيْبِهٖ فِىْ صَفَاءِ ظُفْرَىْ اِبْهَامَيْهِ
مِثْلُ الْمِرْاٰةِ فَقَبَّلَ اٰدَمُ ظُفْرَىْ
اِبْهَامَيْهِ وَمَسَحَ عَلٰى عَيْنَيْهِ فَصَارَ
اَصْلًا لِذُرِّيَّتِهٖ فَلَمَّا اَخْبَرَجِبْرِيْلُ
النَّبِىَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِهٰذِهِ
الْقِصَّةِ قَالَ عَلَيْهِ السَّلَامُ۔ مَنْ
سَمِعَ اِسْمِىْ فِى الْاَذَانِ فَقَبَّلَ
ظُفْرَىْ اِبْهَامَيْهِ وَمَسَحَ عَلٰى عَيْنَيْهِ
لَمْ يَرْمُدْ اَبَدًا۔ روح البیان صفحہ ۴/۶۴۹

की तस्बीह पढ़ी, इसी वास्ते इस उंगली का नाम कलमे की उंगली हुआ जैसा कि रौजुल-फ़ायक़ में है। और अल्लाह तआला ने अपने हबीब के जमाले मुहम्मदी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हज़रत आदम के दोनों अंगूठों के नाखुनों में मिस्ले आईना ज़ाहिर फ़रमाया तो हज़रत आदम ने अपने अंगूठों के नाखुनों को चूमकर आँखों पर फेरा पस यह सुन्नत उनकी औलाद में जारी हुई। फिर जब जिबरईल अमीन ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इसकी ख़बर दी तो आपने फ़रमाया जो शख़्स अज़ान में मेरा नाम सुने और अपने अंगूठों के नाखुनों को चूमकर आँखों से लगाए वह कभी अंधा न होगा।



(2) इसी तफ़्सीर रूहुलबयान में है कि:-

در محیط آورده که پیغمبر صلی اللہ
علیہ وسلم بمسجد در آمد نزدیک
ستون نشست و صدیق رضی اللہ عنہ
در برابر آنحضرت نشستہ بود بلال
رضی اللہ عنہ برخاست و با ازان

मुहीत में लाया है कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मस्जिद में तशरीफ़ लाए और एक सुतून के क़रीब बैठ गए। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु भी आपके बराबर बैठे थे। हज़रत

बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु ने उठकर अज़ान देना शुरू की जब उन्होंने

कहा, हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने दोनों अंगूठों के नाखुनों को अपनी दोनों आँखों पर रखा और कहा *क़ुर्रतु अैनी बि-क या रसूलल्लाह*। जब हज़रत बिलाल अज़ान दे चुके, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ऐ अबू बकर जो शख़्स ऐसा करे जैसा कि तुमने किया है ख़ुदा तआ़ला उसके तमाम गुनाहों को बख़्श देगा।

اشتغال فرمود چوں گفت اشہد ان محمد رسول اللہ ابو بکر رضی اللہ ہر دو ناخن ابہامین خود را بر ہر دو چشم خود نہا دہ گفت قُرَّۃُ عَیْنِیْ بِکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ چوں بلال رضی اللہ عنہٗ فارغ شد حضرت رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فرمودہ کہ یا ابا بکر ہر کہ بکند چنیں کہ تو کردی خدائے بیامرزد گناہان۔ جدید وقدیم اورا اگر عمد بودہ باشد اگر بخطاء۔



(3) और हज़रत शैख़ इमाम अबूतालिब मुहम्मद बिन अ़ली अलमक्की अल्लाह उनके दर्जात बुलन्द करे अपनी किताब क़ुव्वतुल क़ुलूब में इब्न ऐनैही से रिवायत फ़रमाते है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज़े जुमा अदा करने के लिए मोहर्रम की दसवीं तारीख़ को मस्जिद में तशरीफ़ लाए और एक सुतून के क़रीब बैठ गए। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने (अज़ान में हुज़ूर का नाम सुन कर) अपने दोनों अंगूठों के

وحضرت شیخ امام ابو طالب محمد بن علی المکی رفع اللہ درجتہ در قوت القوب روایت کردہ از ابن عیینہ رحمتہ اللہ کہ حضرت پیغمبر علیہ الصلوٰۃ والسلام بمسجد در آمد در دہہ محرم وبعد از انکہ نماز جمعہ ادا فرمودہ بود نزدیک اسطوانہ قرار گرفت وابو بکر رضی اللہ عنہٗ بظہر ابہا مین چشم خود را مسح کرد و گفت قرۃ عینی

नाखुनों को अपनी आँखों पर फेरा और कहा *कुर्रति अैनी बि-क या रसूलल्लाह* जब हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु अज़ान से फ़ारिग़ होगए। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ऐ अबू बकर जो शख़्स तुम्हारी तरह मेरा नाम सुनकर अंगूठे आँखों पर फेरे और जो तुमने कहा वह कहे खुदा तबारक व तआ़ला उसके तमाम नये व पुराने ज़ाहिर व बातिन गुनाहों से दरगुज़र फ़रमाएगा।

بک یار سول اللہ و چوں بلال رضی اللہ عنہ از اذاں فراغتی روئے نمود حضرت رسول صلی اللہ علی و صلم فرمودہ کہ ای ابا بکر ہر کہ بگوید آنچہ تو گفتی از روئے شوق بلقائے من و بکند آنچہ تو کردی خدائے در گزارد گناہان ویرا آنچہ باشد نو و کہنہ خطا و عمد و نہاں و آشکارا۔

(4) अल्लामा इमाम शमसुद्दीन सख़ावी रहमतुल्लाह अलैहि वैलमी के हवाले से नक़्ल फ़रमाते है कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हू ने-



जब मुअज़्ज़िन को कहते सुना तो यही कहा और अपनी अंगुश्ताने शहादत के पोरे जानिबे ज़ेरीं से चूमकर आँखों से लगाए तो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स मेरे इस प्यारे दोस्त की तरह करेगा मेरी शफ़ाअ़त उसके लिए हलाल होगई।

لَمَّا سَمِعَ قَوْلَ الْمُؤَذِّنِ اَشْهَدُاَنَّ مُحَمَّدًارَسُوْلُ اللّٰهِ قَالَ هٰذَا وَقَبَّلَ بَاطِنَ الْاُ نَمُلَتَيْنِ السَّبَابَتَيْنِ وَ مَسَحَ عَلٰى عَيْنَيْهِ فَقَالَ صَلَّے اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ فَعَلَ مِثْلَ مَا فَعَلَ خَلِيْلِى فَقَدْ حَلَّتْ لَهٗ شَفَاعَتِى المقاصد الحسنۃ

الاحادیث الدائرۃ علی السنۃ

(5) यही इमाम सख़ावी हज़रत अ़बू अब्बास अहमद बिन अबी बकर रदादुल यमानी की किताब "मुजिबातुर्रहमा व अज़ाइमुल

मग़फ़िरत" से नक़ल फ़रमाते है कि हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया:-

مَنْ قَالَ حِيْنَ يَسْمَعُ الْمُؤَذِّنَ يَقُوْلُ اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَسُوْلُ اللّٰهِ مَرْحَبًا بِحَبِيْبِيْ وَقُرَّةِ عَيْنِيْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِاللّٰهِ صَلَّے اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمْ وَيُقَبِّلُ اِبْهَامَيْهِ وَيَجْعَلُهُمَا عَلٰے عَيْنَيْهِ لَمْ يَعْمَ وَلَمْ يَرْمُدْ۔

जो शख़्स मुअज़्ज़िन से सुनकर कहे *मरहबा बिहबीबी व कुर्र-तु अैनी मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम* फिर दोनों अंगूठे चूम कर आँखों पर रखे उसकी आँखें कभी न दुखेंगी।

(6) यही इमाम सख़ावी फ़क़ीह मुहम्मद बिन सईद ख़ौलानी रहमतुल्लाह अलैह से रिवायत करते है कि सय्यदना हज़रत इमाम हसन अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया:-

مَنْ قَالَ حِيْنَ يَسْمَعُ الْمُؤَذِّنَ يَقُوْلُ اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَسُوْلُ اللّٰهِ مَرْحَبًا بِحَبِيْبِيْ وَقُرَّةِ عَيْنِيْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِاللّٰهِ صَلَّے اللّٰهِ وَسَلَّمْ وَيُقَبِّلُ اِبْهَامَيْهِ وَيَجْعَلُهُمَا عَلٰے عَيْنَيْهِ لَمْ يَعْمَ وَلَمْ يَرْمُدْ (المقاصدالحسنته)

जो शख़्स मुअज़्ज़िन से सुनकर कहे *मरहबा बिहबीबी कुर्र-तु अैनी मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* फिर दोनों अंगूठे चूम कर आँखों पर रखे वह कभी अन्धा न होगा और न उसकी आँखे कभी दुखेंगी।

(7) यही इमाम सख़ावी, शमसुद्दीन इमाम मुहम्मद बिन सालेह मदनी की तारीख़ से नक़ल फ़रमाते है कि उन्होंने फ़रमाया मैंने हज़रत मजदे मिस्त्री को जो कामिलीने सालेहीन में से थे फ़रमाते सुना कि:-

जो शख़्स नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ज़िक्रे पाक अज़ान में सुन कर दुरूद भेजे और कल्मा की उंगलियां और अंगूठे मिला कर उनको बोसा दे और आँखों पर फेरे उसकी आँखें कभी न दुखेंगी।

مَنْ صَلّٰی عَلَی النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ اِذَا سَمِعَ ذِکْرَهٗ فِی الْاَذَانِ وَجَمَعَ اِصْبَعَیْهِ الْمُسَبِّحَةِ وَالْاِبْهَامِ وَقَبَّلَهُمَا وَمَسَحَ بِهِمَا عَلٰی عَیْنَیْهِ لَمْ یَرْمُدْ اَبَدًا

(8) यही इमाम सखा़वी, इन ही इमाम मुहम्मद बिन सालेह की तारीख़ से नक़ल फ़रमाते हैं कि उन्होंने फ़रमाया इराक़ के बहुत से मशाइख़ से मरवी हुआ है कि जब अंगूठे चूम कर आँखों पर फेरे तो यह दुरूद शरीफ़ पढ़े



इन्शा अल्लाह कभी आँखें न दुखेंगी और यह मुजर्रब है। इसके बाद इमाम मज़कूर फ़रमाते हैं कि जबसे मैंने यह सुना है यह मुबारक अ़मल करता हूं आज तक मेरी आँखें न दुखी है और न इन्शाअल्लाह दुखेंगी। (मक़ासिदुल हसनह)

(9) यही इमाम सखा़वी इमाम ताउसी से नक़ल फ़रमाते हैं कि उन्होंने शमसुद्दीन मुहम्मद बिन अबी नस्र बुखा़री ख़्वाजा-ए-हदीस से यह हदीसे मुबारक सुनी फ़रमाया:-

जो शख़्स मुअज़्ज़िन से कलम-ए-शहादत सुन कर अंगूठों के नाखुन चूमे और आँखों पर फेरे और यह पढ़े

مَنْ قَبَّلَ عِنْدَ سَمَاعِهٖ مِنَ الْمُؤَذِّنِ کَلِمَةَ الشَّهَادَةِ ظُفْرَیْ اِبْهَامَیْهِ وَمَسَحَهُمَا عَلٰی عَیْنَیْهِ وَقَالَ عِنْدَ الْمَسِّ اَللّٰهُمَّ احْفَظْ حَدَقَتَیَّ وَنَوِّرْ

هُمَا بِبَرَكَةِ حَدَقَتَى مُحَمَّدٍ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَنُوْرِهِمَا لَمْ يَعْمِ المقاصد الحسنة

वह कभी अन्धा न होगा।

(10) शरह नक़ायह में है :-

وَعَلَمْ اَنَّهُ يَسْتَحَبُ اَنْ يُقَالَ عِنْدَ سَمَاعِ الْاُوْلٰى مِنَ الشَّهَادَةِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ وَ عِنْدَ الثَّانِيَةِ مِنْهَا قُرَّةُ عَيْنِيْ بِكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ ثُمَّ يُقَالُ اَللّٰهُمَّ مَتِّعْنِيْ بِالسَّمْعِ وَالْبَصَرِ بَعْدَ وَضَعِ ظَفَرَيِ الْاِبْهَامَيْنِ عَلَى الْعَيْنَيْنِ فَاِنَّهُ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَكُوْنُ لَهُ قَائِدًا اِلَى الْجَنَّةِ

जान लो कि बेशक अज़ान की पहली शहादत के सुनने पर सल्लल्लाहु अलैका या रसूलल्लाह और दूसरी शहादत के सुनने पर क़ुर्र-तु अैनी बि-क या रसूलल्लाह कहना मुस्तहब है। फिर अपने अंगूठों के नाखुन (चूम कर) अपनी आँखों पर रखे और कहे

तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ऐसा करने वाले को अपने पीछे-पीछे जन्नत में ले जायेंगे।



(11) अ़ल्लामा शामी रहमतुल्लाह अलैहि रद्दुल मुहतार शरह दुर्रे मुख़्तार में यही इबारत लिख कर फ़रमाते

كذا فى كنز العباد قهستانى ونحوه فى الفتاوى الصوفيه وفى كتاب الفردوس مَنْ قَبَّلَ ظُفرَى اِبْهَامَيْهِ عِنْدَ سَمَاعِ اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ فِى الْاَذَانِ اَنَا قَائِدُهٗ وَمُدْخِلُهٗ فِىْ صُفُوْفِ الْجَنَّةِ وَتَمَامُهٗ فِىْ حَوَاشِى الْحَجَرِ لِلرَّمْلِى۔

ऐसा ही कंजुल एबाद इमाम क़हस्तानी में और इसी की मिस्ल फ़तवा सूफ़िया में है और किताबुल फ़िरदौस में है कि जो शख़्स अज़ान

में اشهد ان محمدرسول الله सुन कर अपने अंगूठों के नाखुनों को चूमे (उसके मुतअल्लिक़ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फ़रमान है कि) मैं उसका क़ायद बनूंगा और उसको जन्नत की सफ़ों में दाख़िल करूंगा। इसकी पूरी बहस बहरुर-राइक़ के हवाशीए रमली में है।

(12) रईसुल फुक़हाये हनफ़िया अ़ल्लामा तहतावी रहमतुल्लाह अलैह शरह मराक़ीयुल फ़लाह में यही इबारत और वैलमी की हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु वाली मरफ़ूअ़ हदीस नक़ल करके फ़रमाते है-

وكذاروى عن الخضر عليه السلام وبمثله يعمل فى الفضائل

और इसी तरह हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम से भी रिवायत किया गया है और फ़ज़ाइले आमाल में इन अहादीस पर अमल किया जाता है।



(13) अ़ल्लामा इमाम कहस्तानी शरहुल कबीर में कन्जुल एबाद से नक़ल फ़रमाते है।

اعلم انه يستحب عند سماع الاولى من الشهادة الثانية صلى الله عليك يا رسول الله وعند سماع الثانية قرة عينى بك يا رسول الله ثم يقال اللهم متعنى بالسمع والبصر بعد وضع ظفرى الابهامين على العينين فانه صلى الله عليه وسلم يكون قاعدا الى الجنة

जान लो बिलाशुबहा अज़ान की पहली शहादत के सुनने पर सल्लल्लाहु अ़लैक या रसूलल्लाह और दूसरी शहादत के सुनने पर *.क़ुर्-तु ऐनी बि-क या रसूलल्लाह* कहना मुस्तहब है फिर अपने अंगूठों के नाखुन (चूम कर) अपनी आँखों पर रखे और कहे

तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ऐसा करने वाले को अपने पीछे-पीछे जन्नत

صَرَّحَ بِهِ مَشَائِخُنَا

में ले जायेंगे।

(14) शाफ़ई मज़हब की मशहूर किताब "अआनतुल तालिबीन अला ले-हल्लिल अलफ़ाज़ फ़तहुल मोईन के सफ़हा 247" और मालकी मज़हब की मशहूर किताब 'किफ़ायतुल तालिबुर्रब्बानी लिरिसालाति इब्ने अबी ज़ैद अल क़ीरवानी के सफ़हा 169 पर है कि जब अज़ान में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नामे पाक सुने तो दुरूद शरीफ़ पढ़े।

ثُمَّ يُقَبِّلُ اِبْهَامَيْهِ وَيَجْعَلُهُمَا عَلٰى عَيْنَيْهِ لَمْ يَعْمَ وَلَمْ يَرْمُدْ اَبَدًا

फिर अंगूठा चूमे और उनको आँखों पर रखे तो न कभी अन्धा होगा और न कभी आँखें दुखेंगी।

(15) शैखुल मशाइख़ रईसुल मुहक़्क़िक़ीन, सय्यदुल उलमा-ए-हनफ़िया बिमक्कतिल मुकर्रिमा मौलाना जमाल बिन अब्दुल्लाह बिन उमर मक्की रहमतुल्लाह अलैह अपने फ़तवा में फ़रमाते हैं कि-



سُئِلْتُ عَنْ تَقْبِيْلِ الْاِبْهَامَيْنِ وَ وَضْعِهِمَا عَلَى الْعَيْنَيْنِ عِنْدَ ذِكْرِ اِسْمِهٖ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمْ فِى الْاَذَانِ هَلْ هُوَ جَائِزٌ اَمْ لَا اَجَبْتُ بِمَا نَصُّهٗ نَعَمْ تَقْبِيْلُ الْاِبْهَامَيْنِ وَ وَضْعُهُمَا عَلَى الْعَيْنَيْنِ عِنْدَ ذِكْرِ اِسْمِهٖ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمْ فِى الْاَذَانِ جَائِزٌ بَلْ هُوَ مُسْتَحَبٌّ صَرَّحَ بِهِ مَشَائِخُنَا-

मुझसे सवाल हुआ कि अज़ान में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस्मे मुबारक के ज़िक्र के वक़्त अंगूठे चूमना और आँखों पर रखना जाइज़ है या नही? मैंने इन लफ़्ज़ों से जवाब दिया कि हां अज़ान में हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नामे मुबारक सुन कर अंगूठे चूमना और आँखों पर रखना जाइज़ बल्कि मुस्तहब है हमारे मशाइखे़ मज़हब ने इसके मुस्तहब होने की तसरीह फ़रमाई है।

(16) शैखुल आ़लिम अल मुफ़स्सिल अल्लामा नूरुद्दीन ख़ुरासानी रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते है कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नामे मुबारक अज़ान में सुन कर अंगूठे चूमा करता था। फिर छोड़ दिया, तो मेरी आँखें बीमार होगयी।

तो मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख़्वाब में देखा, फ़रमाया तूने अज़ान के वक़्त अंगूठे चूम कर आँखों से लगाना क्यों छोड़ दिया? अगर तू चाहता है कि तेरी आँखें दुरुस्त हो जायें तो वह अ़मल फिर शुरूअ़ कर दे। पस मै बेदार हुआ और यह अ़मल शुरू कर दिया तो मेरी आँखें दुरुस्त हो गयी। और उसके बाद अब तक वह मर्ज़ नहीं लौटा।

فَرَاَيْتُ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنَامًا فَقَالَ لِمَ تَرَكْتَ مَسْحَ عَيْنَيْكَ عِنْدَ الْاَذَانِ اِنْ اَرَادَتْ اَنْ تَبْرَاَ عَيْنَاكَ فَعُدْ اِلَى الْمَسْحِ فَاسْتَيْقَظْتُ وَمَسَحْتُ فَبَرِئْتُ وَلَمْ يُعَاوِدْنِىْ مَرَضُهُمَا اِلَى الْاٰنَ



(17) हज़रत वहब बिन ममबह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते है कि बनी इसराईल में एक शख़्स था जिसने दो सौ बरस अल्लाह तआ़ला की नाफ़रमानी में गुज़ारे थे। जब वह मर गया तो लोगों ने उसको मज़बला (जहां नजासत वग़ैरह डाली जाती है) में फेंक दिया तो अल्लाह तआ़ला ने मूसा अलैहिस्सलाम को वहीय की कि इसको वहां से उठाओ और उस पर नमाज़ पढ़ो। मूसा अलैहिस्सलाम ने अ़र्ज़ किया ऐ मेरे परवरदिगार! बनी इसराईल इसके नाफ़रमान होने की शहादत देते है। इर्शाद हुआ यह ठीक है-

मगर उसकी आ़दत थी कि जब वह तौरात को खोलता और (हज़रत) मुहम्मद सल्लल्लाहु

اِلَّا اَنَّهُ كَانَ كُلَّمَا نَشَرَ التَّوْرَاةَ وَنَظَرَ

اِلىٰ اِسْمِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَبَّلَهُ وَوَضَعَهُ عَلىٰ عَيْنَيْهِ وَصَلّٰى عَلَيْهِ فَشَكَرْتُ ذٰلِكَ لَهُ وَغَفَرْتُ ذُنُوْبَهُ وَزَوَّجْتُهُ سَبْعِيْنَ حُوْرَاءَ

अलैहि वसल्लम के नामे पाक को देखता तो उस नाम को चूम कर आँखों से लगा लेता और दुरूद भेजता। पस मैंने उसका यह हक़ माना और उसके गुनाह को बख़्श दिया और सत्तर हूरें उसके निकाह में दीं।

(18) सय्यदुल आ़रफ़ीन हज़रत मौलाना रूम रहमतुल्लाह अलैह मसनवी शरीफ़ में फ़रमाते हैं।

बूद दर इंजीले नामे मुस्तफ़ा आं सरे पैग़म्बरां बहरे सफ़ा

इंजील में हज़रत मुम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नामे मुबारक दर्ज था वह मुस्तफ़ा जो पैग़म्बरों के सरदार और बहरे सफ़ा है।

बूद ज़िक्रे हुलिया हा व शक्ले ऊ बूवद ज़िक्रे ग़ज़ो सोम व अक्ले ऊ



नीज़ आपके औसाफ़े जिस्मानिया, शकलो शमाइल, जिहाद करने, रोज़ा रखने और खाने-पीने का हाल भी दर्ज था।

ताइफ़ा नसरानियां बहरे सवाब चूं रसीदन्दे बदां नामो ख़िताब
बोसा दादन्दे बदां नामे शरीफ़ रूनेहा दन्दे बदां वस्फ़े लतीफ़

ईसाइयों की एक जमाअ़त जब इस नामे पाक और ख़ताबे मुबारक पर पहुंची तो वह लोग बग़रज़े सवाब इस नामे शरीफ़ को बोसा देते और इस ज़िक्रे मुबारक पर बतौरे ताज़ीम मुंह रख देते।

नस्ले ईशां नीज़ हम बिस्यार शुद नूरे अहमद नासिर आमद यार शुद

(इस ताज़ीम की बदौलत) उनकी नस्ल बहुत बढ़ गयी और हज़रत अहमद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नूरे मुबारक (हर मुआ़मले में) उनका मददगार और साथी बन गया।

वां गरोहे दीगर अज़ नसरानियां नामे अहमद दाशतन्दे मुस्तहां

और उन नसरानियों का वह दूसरा गिरोह अहमद सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम के नामे मुबारक की बेक़दरी किया करता था।

मुस्तहाने ख़्वार गश्तन्द आं फ़रीक़

गश्ता महरूम अज़ ख़ुद व शर्ते तरीक़

वह लोग ज़लीलो ख़्वार होगए अपनी हस्ती से भी महरूम होगए (कि क़त्ल किए गए) और मज़हब से भी महरूम होगए यानी अक़ाइद ख़राब होगए।

नामे अहमद चूं चुनीं यारी कुनद    ताकि नूरश चूं मददगारी कुनद

जब हज़रत अहमद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नामे मुबारक ऐसी मदद करता है तो ख़याल करो कि आपका नूरे पाक किस क़दर मदद कर सकता है।

नामे अहमद चूं हिसारे शुद हिस्सीन

ताचे: बाशद ज़ाते आं रूहुल-अमीं

जब हज़रत अहमद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नामे मुबारक ही हिफ़ाज़त के लिए मज़बूत क़िला है तो उस रूहुल अमीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ाते मुबारक कैसी होगी।

(मसनवी शरीफ़ दफ़्तरे अव्वल)

शुबहा! बाज़ लोग यह कहते है कि यह तमाम अहादीस ज़ईफ़ है इनमें एक भी सही मरफ़ूअ़ हदीस नहीं है चुनान्चे: मुहद्देसीन ने इन अहादीस को लिख कर फ़रमाया    लिहाज़ा अहादीसे ज़ईफ़ा से किस तरह एक शरअ़ी मसअला साबित हो सकता है?

इसके मुतअ़ल्लिक़ सिर्फ़ इतना अ़र्ज़ कर देना काफ़ी है कि मुहद्देसीन किराम का किसी हदीस के मुतअ़ल्लिक फ़रमाना कि सही नहीं इसके यह मअना नहीं होते कि ग़लत व बातिल है बल्कि इसका मतलब यह होता है कि यह सेहत कि उस आ़ला दर्जे को न पहुंची जिसे मुहद्देसीन अपनी इस्तेलाह में दर्जा-ए-सेहत कहते हैं। याद रखिए! इस्तेलाहे मुहद्देसीन में दीस का सबसे आ़ला दर्जा सही और सबसे बदतर मौज़ूअ़ है और वस्त में बहुत से अक़साम है जो दर्जा

ब दर्जा मुरत्तब हैं। सही के बाद हसन का दर्जा है लिहाज़ा नफ़ीए सेहत नफ़ीए हसन को मुस्तलज़िम नही। बल्कि अगर ज़ईफ़ भी हो तो फ़ज़ाइले आमाल में हदीस ज़ईफ़ बिलइजमाअ़ मक़बूल है और इन अहादीस के मुतअ़ल्लिक़ मुहद्देसीन का ला यसह फ़ीलमरफ़ूअ़ यानी यह तमाम अहादीस हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक मरफ़ूअ होकर सही साबित नही हुई फ़रमाना साबित करता है कि यह अहादीस मौकूफ़ सही है।

(19) चुनान्चे अ़ल्लामा इमाम मुल्ला अ़ली क़ारी रहमतुल्लाह अ़लैहि फ़रमाते है।

قُلْتُ وَاِذَاثَبَتَ رَفْعُهٗ اِلَى الصِّدِّيْقِ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ فَيَكْفِىْ لِلْعَمَلِ بِهٖ لِقَوْلِهٖ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكُمْ بِسُنَّتِىْ وَسُنَّةِ الْخُلَفَاءِ الرَّاشِدِيْنَ

मै कहता हूं कि जब इस हदीस का रफ़अ़ हज़रत सिद्दीके़ अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु तक साबित है तो अ़मल के लिए क़ाफ़ी है क्योंकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फ़रमान है कि मै तुम पर लाज़िम करता हूं अपनी सुन्नत और अपने खुल्फ़ा-ए-राशेदीन की सुन्त।

मालूम हुआ कि हदीसे मौकूफ़ सही है क्योंकि सय्यदिना सिद्दीके़ अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु तक इसका रफ़अ़ साबित है। और सय्यदिना सिद्दीके़ अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की सुन्नत हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत है। चुनान्चे मुख़ालेफ़ीन के सरदार मौलवी ख़लील अहमद अम्बेठवी व मौलवी रशीद अहमत गंगोही कहते है। "जिसके जवाज़ की दलील कुरूने सलासा में हो ख़्वाह वह जज़बीयए बे वजूद ख़ारजी उन कुरून में हुआ या न हुआ और ख़्वाह उसकी जिन्स का वजूद ख़ारिज में हुआ हो या न हुआ हो वह सब सुन्नत है (बराहीने क़ातिआ सफ़हा 28) साबित हुआ कि गंगोही साहिब के नज़दीक़ अज़ान में नामे अक़दस सुनकर अंगूठे चूमना सुन्नत है क्योंकि मुल्ला

अली क़ारी की इबारत से क़ुरूने सलासा में इसकी असल मुतहक़्क़िक़ हो गयी. फिर इसको बिदअ़त वग़ैरह कहना जिहालत और तअ़स्सुब नही तो और क्या है।"

## अपने सुन्नी भाईयों की ख़िदमत में

मेरे सुन्नी भाईयो! होश में आओ। ख़बरदार होजाओ। यह दौर बड़ा ना.ज़ुक और फ़ितनों का दौर है। सख़्त आज़माइश का वक़्त है। बे दीनी व बद अ़क़ीदगी की आंधियां और गुमराही के तूफ़ान ज़ोरों पर हैं। लिहाज़ा अपने ईमानो अक़ाइद की ख़ूब हिफ़ाज़त करो और बुज़ुरगाने दीन के तरीक़े पर क़ाइम रहो। ग़ैरों की सोहबत व मजलिस और तक़ारीर व लेट्रेचर से इजतेनाब करो और उल्मा-ए-रब्बानीईन, बुज़ुरगाने दीन, सल्फ़े सालेहीन के हालात का मुताअ़ला करो और उनकी किताबें पढ़ो और सौम व सलात की पाबन्दी करो। दुरूद व सलाम की कसरत रखो। क्योंकि ईमान की सलामती इससे वाबस्ता है। शरीअ़त के मुताबिक़ दाढ़ियां रखो। सादा व सुथरा लिबास पहनो। सरों पर अंग्रेज़ी बाल न रखो। कानों तक पट्टे रखो। किसी अल्लाह वाले की सोहबत अख़्तियार करो जो सही मानों में अल्लाह वाला हो। आपस में इत्तेफ़ाक़ व मुहब्बत से रहो। अल्लाह करीम तबारक व तआ़ला बतुफ़ैल अपने हबीबे करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम हमें अहले सुन्नत व जमाअ़त के अ़क़ाइद व आ़माल पर क़ाइम रखे और ख़ात्मा ईमान पर फ़रमाए। *आमीन सुम्म आमीन0 बहुर्मते सय्यदिल मुर्सलीन रहमतुल लिल आलिमीन शफ़ीउल मुज़न्निबीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही व अस्हाबिही व बारिक व सल्लिम0*

तालिबे दुआ

मुहम्मद शफ़ी अलख़तीब

ओकाड़वी कराची